Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आधुनिक हिन्दी काव्य

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का काव्य

1

प्रश्न 1. भारतेन्दु के भक्तिपरक काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। धर्म, दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में तो भारत की तुलना विश्व का कोई अन्य देश नहीं कर सकता। भारत तथा भारतवासियों को अपनी संस्कृति तथा गौरवशाली परम्परा पर गर्व है। आधुनिक यूरोपीय विद्वान् भी परम्परा को महत्त्व देते हैं और **टी.एस. इलियट** का मत है कि परम्परा से स्वयं को काटना आत्मघात जैसा होता है। भारतेन्दु-युग को हिन्दी साहित्य का नवजागरण काल और स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को नवजागरण का अग्रदूत माना गया है।

भारतेन्दु युग से पूर्व के युग को (संवत् 1700-1900) को हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल कहा गया है। इस काल में हिन्दी कविता विलासिता के पंक में डूबी हुई थी। इस काल में अधिकांश हिन्दी कवि राज्याश्रित, दरबारी तथा शृंगार वृत्ति के रसिक कवि थे और उन्होंने रूढ़िबद्ध, शृंगार रस एवं सामंत वर्ग को अनुरंजित करने वाला, स्तुतिपरक, चाटुकारिता से पंकिल तथा उनकी काम-वासना को उद्दीप्त करने वाला काव्य लिखा। इस काव्य को शृंगार रस की पिचकारियां छोड़ने वाला काव्य कहा गया है।

भारतेन्दु यद्यपि स्वयं को पूरी तरह इस शृंगार प्रवृत्ति से मुक्त नहीं कर पाये, फिर भी उन्होंने जिस काव्यधारा का सूत्रपात किया वह विषय, रूप, भाव, भाषा, सभी स्तरों पर अभिनव है। इन कवियों ने कविता की पुरानी केंचुल उतार कर उसे नया रूप देने की चेष्टा की है। दमघोंटू दरबारी वातावरण से मुक्त करके उसे नई प्राणशक्ति प्रदान की है। साहित्य को जनता के दु:ख-दर्द, इच्छाओं, आकांक्षाओं से जोड़ा है।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं कि कवि के लिए अपनी परम्परा, अपने परिवेश, अपने पारिवारिक संस्कारों से एकदम कट जाना संभव नहीं है। भारतेन्दु का परिवार वैष्णव संस्कारों वाला परिवार था। सगुण भक्ति, मूर्तिपूजा, देवी-देवताओं में आस्था-विश्वास रखने वाला परिवार था। अत: स्वयं भारतेन्दु वल्लभ संप्रदाय में दीक्षित राधा-कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

मेरे तो साधन एक ही हैं
जग नन्दलला वृषभानु दुलारी।"

अथवा

सखा प्यारे कृष्ण के, गुलाम राधा रानी के।
रहैं क्यों एक म्यान असि होय
जिन नैनन में हरि रस छायो तेहि क्यों भावै कोय?

अत: उनके भक्ति-पदों में कहीं विनय-भक्ति और कहीं सख्य भक्ति में भाव मिलते हैं। इनके अतिरिक्त सूरदास से प्रभावित होकर उन्होंने वात्सल्य भक्ति के भी कुछ पद भी लिखे हैं। मध्ययुगीन कृष्णभक्ति-काव्य की सरसता और तन्मयता से अनुप्राणित उनकी कविता का प्रमुख स्वर माधुर्य भाव की भक्ति ही है।

इनकी भक्तिपरक कविताओं में भक्त कवियों की तरह ईश्वर की वन्दना है, उनका गुणगान है, अपने आराध्य राधा-कृष्ण के रूप-सौन्दर्य का चित्रण है, उनके प्रेम का वर्णन है, उनके मिलन-चित्रों का सरस अंकन है।

अन्य कवियों के समान उन्होंने अन्य देवी-देवताओं की स्तुति की है, गंगा-स्नान की महिमा का वर्णन किया है।

(वैशाख माहात्म्य)

सगुणोपासक भक्त होते हुए भी भारतेन्दु अन्धविश्वासी और लकीर के फकीर न थे, प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर

www.neerajbooks.com

परखकर तथा जनहित को दृष्टि में रखकर ही वे किसी बात का समर्थन या विरोध करते थे। यही कारण है कि सगुण भक्ति और मूर्तिपूजा का, अनेक देवी-देवताओं में आस्था रखते हुए भी अद्वैतवाद को स्वीकार नहीं किया, कवि और ब्रह्म को भिन्न-भिन्न माना,

अहं ब्रह्म सब मूरख भाखैं, ज्ञान गरूर बढ़ाए।
जो तुम ब्रह्म चोट केहि लागी, रोइ तजौ क्यों प्रान॥

वह शंकराचार्य के '*अहं ब्रह्मोस्मि*' तथा '*ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या*' को अस्वीकार करते हैं। वह यथार्थवादी हैं, इस जगत् और समाज को सुखमय बनाने के पक्षधर हैं, कल्पना-लोक में न उड़कर वास्तविकता को पहचान कर उसके अनुसार जीवन जीने की बात कहते हैं,

जहाँ अगर झूठा है तो फिर मतवालों को क्या है काम
वेद वगैरह भी तो जहाँ में हैं फिर क्या है इनसे काम

वह सच्चे भक्त हैं अत: कबीर के समान पाखण्ड का, धर्माडम्बर का विरोध करते हैं, ईश्वर की सच्ची भक्ति के पक्षधर हैं, ऐसे भक्ति-मार्ग पर चलने का परामर्श देते हैं, जो सबके लिए सुलभ है,

पियारौ पै यै केवल प्रेम में
नाहि जान में, नाहिं ध्यान में, नाहिं करम कुल नेम में
नाहिं भारत में, नाहिं रसायन में नाहिं मनु में नाहिं वेद में
नाहिं मंदिर में नाहिं पूजा में नाहिं घंटा की घोर में

आडम्बर कहीं भी हो मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर वह उन्हें अस्वीकार्य है,

मस्जिद, मन्दिर गिरजों में देखा मतवालों का जो दौर
सिवा झूठी बातों व बनावट में न नजर आया कुछ और

वल्लभ संप्रदाय में दीक्षित होने, वैष्णव परिवार के संस्कारों में डूबे, राधा-कृष्ण के अनन्य भक्त होते हुए भी भारतेन्दु का दृष्टिकोण उदार था। वह संकीर्ण-संकुचित विचारधारा वाले कट्टरवादी न होकर सहृदय थे। आज जिसे धर्मनिरपेक्षवाद या सर्वधर्मसमभाव कहा जाता है, उसके बीज भारतेन्दु के मन में पड़े थे। वह मानते थे कि मत-मतान्तरों पर झगड़ना मूर्खता है। सबको अन्य धर्मों का आदर-सम्मान करना चाहिए।

'सब मत अपने ही तो है इनको कहा उत्तर दीजै।

उन्होंने धर्मान्ध, साम्प्रदायिक विद्वेष वाले धार्मिक मतभेदवादियों की तीव्र भर्त्सना की है,

अपुनो अपुनो मत लै लै जब झगरत ज्यौ मठिहारे।

उनकी भक्ति में सभी धर्म मानव-कल्याण की, नैतिक मूल्यों की, सदाचार की, ईश्वर-भक्ति की, सहिष्णुता की, मानवतावाद की सीख देते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में जैन, सिक्ख, इस्लाम आदि धर्मों का महत्त्व स्वीकार किया है।

वस्तुत: उनकी दृष्टि समाज की सम्पूर्ण उन्नति, समूचे देश की प्रगति और मानवमात्र के सुख पर केन्द्रित थी। वह सर्वत्र ईश्वर की सत्ता मानते हैं, संकीर्ण धर्मावलम्बियों को मूर्ख बताते हैं

बात कोऊ मूरख की यह मानौ
हाथी भावै लेइ नाहिं, जिन मन्दिर में जानो
जग में तेरे बिना और है दूजो कौन ठिकानो।

गुरु नानक की प्रशंसा में वे कहते हैं,

बाबा नानक हरि-नाथ है पंचनदहि उद्धार किया।

उन्होंने कुरान का अनुवाद किया था और इस्लाम धर्मावलंबियों के प्रति सौहार्द प्रकट करते हुए लिखा था

पिरजादी बीबी रास्ती पद-रज नित सिर धारिये
इन मुसलमान हरि-जनन पै कोटिन हिंदू वारियै।

भारतेन्दु की भक्ति की विशिष्टता यह है कि वह व्यक्ति के मोक्ष, स्वर्ग-प्राप्ति पर बल नहीं देती। उनकी भक्ति समाज-हित तथा स्वदेशानुराग से रूपायित भक्ति है।

भक्ति और देशप्रेम को एक ही समकोण पर प्रतिष्ठित करना उनकी मौलिकता है। वह केशव से अपनी भक्ति की प्रार्थना नहीं करते, देशवासियों के दु:ख दूर करने के लिए उनका आह्वान करते हैं,

कहां करुणानिधि केशव सोये

अथवा

जागो भव तो खल बल दलन रक्षहु अपनो आगे मग

इस प्रकार भारतेन्दु के भक्ति-काव्य की विशेषता है कि उन्होंने केवल निज के उद्धार के लिए भगवान् से प्रार्थना नहीं की है, अपने से अधिक चिन्ता उन्हें अपने देश और देशवासियों की है। वह चाहते हैं कि भगवान् अवतार लेकर तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करें, ब्रिटिश साम्राज्यवाद की अग्नि में पिस रहे देशवासियों का त्राण करें। उनका दुख-दारिद्र्य मिटाएं।

भारतेन्दु का भक्तिकाव्य एक ओर परंपरागत वैष्णव विचारधारा से प्रभावित है तथा दूसरी ओर उसमें आधुनिकता के स्वर भी गूंज रहे हैं। एक ओर वह स्वयं को कृष्ण का सेवक और राधा रानी का गुलाम कहकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति, अनन्य प्रेम प्रकट करते हैं तो दूसरी ओर करुणानिधि केशव को भारतवासियों के कष्ट दूर करने के लिए अवतार लेने का आह्वान करते हैं। उनका भक्ति-काव्य मध्यकालीन भक्ति-काव्य की परंपरा को ग्रहण करते हुए भी धर्मनिरपेक्षता, धार्मिक समन्वयवाद और सर्वधर्मसमभाव के आधुनिक सिद्धान्त और उदारतावादी दृष्टिकोण को अपनाने वाला मंगलमय काव्य है।

प्रश्न 2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की शृंगारपरक कविताओं की विशेषताएं बताइये।

उत्तर भारतेन्दु से पूर्व का काल हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। इस काल में लिखा गया हिन्दी काव्य रूढ़िबद्ध, भोगवाद, शृंगार रस का सामंतादि वर्ग का अनुरंजन करने वाला काव्य था। इस काल के कवियों को समाज-हित, लोक-कल्याण, नीतिवादिता से कोई लेना-देना नहीं था। वह जन-सामान्य से पूरी तरह कटा हुआ काव्य था। इसीलिए इस काल को

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अंधकार युग, नैतिक पतन तथा सुषुप्ति का काल कहा जाता है। इस काल (संवत् 1700-1900) की समाप्ति के उपरान्त उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों तथा पाश्चात्य जगत् की समृद्धि देख तथा कुछ समय बाद ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन की शोषण नीति के कारण देश तथा देशवासियों की दुर्दशा देखकर भारतेन्दु और उनके द्वारा गठित भारतेन्दु मण्डल के उनके मित्रों और सहयोगियों में नई चेतना जागी और उन्होंने अपनी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से नई चेतना जगाने का प्रयास किया। इसीलिए भारतेन्दु युग को नवजागरण काल कहा गया है। काव्य के सम्बन्ध में इस काल में कवियों की धारणा में कुछ परिवर्तन तो आया, परन्तु अधिकांश कवि अब भी रस को काव्य की आत्मा मानते थे। अत: वे अपनी कविताओं के माध्यम से विविध रसानुभूतियों का भावन कराने में लगे रहे। इनमें भक्ति और श्रृंगार रस प्रमुख हैं।

प्रतापनारायण मिश्र को छोड़कर इस काल के अधिकांश कवियों ने श्रृंगार रस की कविताएँ लिखीं। इन्होंने रीतिकालीन श्रृंगार रस के कवियों का अनुसरण करते हुए राधा-कृष्ण के सन्दर्भ में प्रेम और सौन्दर्य का वर्णन किया। '*राधा कनहाइ सुमिरन को बहानौ है*' यह पंक्ति पूर्णत: तो इन पर चरितार्थ नहीं होती, फिर भी उनका काव्य राधा-कृष्ण को नायक-नायिका के रूप में चित्रित करता रहा।

इस काल में श्रृंगार-रसपरक काव्य में तीन धाराएँ प्रवाहित होती दिखाई देती हैं :

(1) रीतिकालीन पद्धति पर नखशिख वर्णन, षड्ऋतु चित्रण और नायिका-भेद।

(2) माधुर्य भक्तिपरक श्रृंगार-चित्रण, तथा

(3) उर्दू कविता से प्रभावित होकर प्रेम की वेदनात्मक व्यंजना।

भारतेन्दु के काव्य में ये तीनों विद्यमान हैं। भारतेन्दु के काव्य में भक्ति-श्रृंगार और विशुद्ध श्रृंगार के चित्र तो हैं ही, उन पर उर्दू काव्य के सौन्दर्य, प्रेम, विरह-वेदना के चित्रों का प्रभाव भी देखा जाता है। उनकी विशेषता है कि रीतिकालीन काव्य-परम्परा का नखशिख वर्णन और नायिका-भेद इनके काव्य में नहीं है।

परंपरा का अनुसरण करते हुए भारतेन्दु ने प्रकृति सौन्दर्य, प्रेम सौन्दर्य और श्रृंगार रस की रचनाएं लिखीं। श्रृंगार के क्षेत्र में बिहारी उनके प्रिय कवि रहे। श्रृंगार रस की कविताएं संख्या में बहुत अधिक नहीं हैं और न इनमें रीतिकालीन कवियों की तरह आश्रयदाताओं-राजाओं, दरबारियों, सामंतों का अनुरंजन करने का ही प्रयास है। रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के स्थान पर वह रीतिमुक्त कवि, घनानन्द की लीक पर चलने वाले कवि हैं। श्रृंगार रस की कविताओं के उनके पांच संग्रह हैं प्रेम सरोवर, प्रेमाश्रु वर्णन, देवी छद्मलीलाएं बसंत होली एवं प्रेम तरंग।

इन रचनाओं का अनुशीलन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि भारतेन्दु परंपरा का पूरी तरह परित्याग तो नहीं कर पाए, क्योंकि वह स्वयं रसिक स्वभाव के थे, परन्तु उनमें अच्छे-बुरे को पहचानने का विवेक अवश्य था और वह अपने समय के समाज को पल भर के लिए भी नहीं भूले, उससे जुड़े रहे।

भारतेन्दु के श्रृंगार रस का काव्य रीतिकालीन रूढ़िबद्ध, सामंतवादी, परिवेश में लिखे गए काव्य से निम्नलिखित बातों में भिन्न है :

(1) उन्होंने रूढ़िबद्ध काव्य नहीं लिखा।

(2) वह सामन्तों के अनुरंजन के लिए लिखा गया काव्य नहीं है।

(3) उसमें बिहारी की तरह चमत्कार लाने की प्रवृत्ति नहीं है।

(4) उनके काव्य में घनानन्द की तरह स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति है।

(5) वह ऋतुओं के जीवंत चित्रण की पृष्ठभूमि में राधा-कृष्ण की प्रेम-लीलाओं का, विरह-मिलन का चित्रण करते हैं।

(6) उनकी प्रेम की पीर घनानन्द की पीर की तरह पाठक के मन को प्रभावित करती है, क्योंकि वह दिल से निकली हुई वाणी है। माथा-पच्ची करने या पच्चीकारी का प्रयास उसके पीछे नहीं है।

(7) उसमें संवेदनशीलता का पुट अधिक है।

बात बिनु करत पिया बदनाम।
कौन हेतु वह लाज हरै मन बिना बात बेकाम।
आजु गई हौं प्रात जमुना तट आयो तहँ घनस्याम।
पकरि मोंहिं जल बीच हलोर्‌यो तोरयो कर को दाम।
लरि कंकन को दियौ खरौटा मेरे मुख सुनु बाम।
'हरिचन्द' जाते जामैं सब छिपै न प्रीति मुदाम।

अथवा

आजु लौं न मिले तो कहा हम तो तुमरे सब भांति कहावै
मेरौ उराहनौ है कछु नाहि सबै फल आपुने भाग को पावै
जो हरिचन्द भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासौं सुनावै
प्यारे जु है जग की यह रीति विदा की समै सब कंठ लगावै।

(8) वह घनानन्द की तरह प्रेम के मार्ग को कठिन बताते हैं :

प्रेम सरोवर की यहै, तीरथ निधि परमान।
लोकवेद कों प्रथम ही देहु तिलांजलि दान।
अति सूक्ष्म कोमल अतिहि अति पतरो अति दूर।
प्रेम कठिन सबसे सदा नित इक इस भरपूर।

(9) उनके श्रृंगार काव्य पर राजस्थानी, पंजाबी, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं में लिखे गए प्रणय काव्य का प्रभाव है तथा उनकी रचनाओं में इन भाषाओं की शब्दावली भी मिलती है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(10) उन्होंने लोक संगीत, गांवों में प्रचलित राग-रागिनियों का प्रयोग किया है और इस प्रकार उसमें लोक तथा परंपरा का समन्वय दिखाई देता है।

सारांश यह है कि भारतेन्दु का श्रृंगार-काव्य परिपाटी निहित, रूढ़िबद्ध, परंपरा का पालन नहीं है। वह अपने समय, अपने समाज, अपने देश की परिस्थितियों के प्रति जागरूक थे। अपने युग के दबावों को महसूस करने वाले, संवेदनशील, जागरूक साहित्यकार थे अत: उन्होने देश के प्रति अपनी पीड़ा को वाणी दी है। परंपरा को लोकजन, लोकमन से जोड़ा है।

प्रश्न 3. 'भारतेन्दु की कविताओं में नवजागरण, समाज सुधार तथा राष्ट्रीय चेतना का समुचित समावेश हुआ है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

अथवा

'भारतेन्दु के काव्य में राजभक्ति का स्वर तो है, पर मूलत: वह देशभक्ति का काव्य ही है।' इस कथन की समष्टि कीजिए।

उत्तर साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। युग-विशेष का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण साहित्य के निर्माण को स्वरूप प्रदान करता है। हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में मुगल शासन वैभव, विलासिता और भोगवाद की दृष्टि से अपने चरमोत्कर्ष पर था। केन्द्रीय शासन की तरह ही हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश अवध, राजस्थान, बुन्देलखण्ड आदि भी विलासिता के पंक में डूबे हुए थे। काव्य राजाओं, उनके सामन्तों तथा दरबार तक सीमित था। कवि जनता की भावनाओं और स्थितियों का प्रतिनिधित्व न कर केवल आश्रयदाताओं का अनुरंजन करने, उनकी चाटुकारिता करते हुए काव्य-रचना करते रहे। अत: रीतिकाल का काव्य जनता से कटा हुआ था।

1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कुचले जाने के बाद ब्रिटिश शासकों के अमानुषिक अत्याचारों और आतंक के परिणामस्वरूप जनता में निराशा, हताशा, अकर्मण्यता, भय का वातावरण व्याप्त था। एक ओर ईसाई मिशनरी ईसाई धर्म के प्रचार में संलग्न थे तथा दूसरी ओर ईस्ट इंडिया कंपनी के स्थान पर महारानी विक्टोरिया के भारत साम्राज्ञी बनने के उपरान्त भी ब्रिटिश उपनिवेशवादी-साम्राज्यवादी शासक भारत का आर्थिक शोषण कर रहे थे। भारत की धन-सम्पदा ब्रिटेन को मालामाल कर रही थी और भारत निर्धन, दीन, दरिद्र, भूखा-नंगा होता जा रहा था। यह स्थिति बहुत दिन तक छिपी नहीं रह सकती थी। अत: भारतेन्दु युग के लगभग सभी कवियों ने जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक भी थे, तथा जो जनता को वास्तविकता से परिचित कराना, उनमें नई चेतना जगाना, उनकी आँखें खोलना अपना कर्त्तव्य मानते थे, जागरण का शंख फूँका और अपनी रचनाओं निबन्धों, लेखों, नाटकों तथा कविताओं के द्वारा नई चेतना का संचार किया। भारतेन्दु मंडल के सदस्यों बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास, ठाकुर जगमोहन सिंह, राधाकृष्ण गोस्वामी, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' सभी की अपनी-अपनी पत्रिकाएं थीं और उन्होंने उनके माध्यम से नवजागरण, समाज-सुधार, राजनैतिक चेतना का पांचजन्य बजाकर तथा धार्मिक अंधविश्वासों, पाखंडों, छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना का विरोध कर जनसामान्य में नई जागरूकता उत्पन्न करने का श्लाघनीय कार्य किया और सोई हुई या अर्ध-सुप्त जनता ने अंगड़ाई ली। पारस्परिक मेल-मिलाप, सौहार्द, देशभक्ति, स्वतंत्रता की भावना का महत्त्व बताकर देशवासियों को सही मार्ग दिखाने का कार्य किया।

इस नई चेतना का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी कविता ने विषय, रूप, भाव, भाषा सभी स्तरों पर नया रूप धारण करना प्रारंभ कर दिया। कविता राजदरबारों तथा सामतंवादी मनोवृत्ति से मुक्त होकर जन-जीवन से, देश की समस्याओं से जुड़ने लगी। सामाजिक सुधार, धार्मिक अंधविश्वासों, रूढ़ियों, पाखंड, आडम्बर का विरोध तथा देश की आर्थिक कठिनाइयाँ एवं स्वतंत्रता उसके विषय बनने लगे। इस क्षेत्र में भारतेन्दु अग्रणी साहित्यकार थे और उनकी प्रेरणा से बने भारतेन्दु मंडल के अन्य कवियों ने इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार भारतेन्दु युग की कविता रीतिकालीन काव्य-परिपाटी को त्याग कर अपने देश, समाज, युग के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर नवजागरण की कविता बन गई।

कतिपय आलोचकों ने भारतेन्दु युग की कविता में विसंवादी स्वरों की ओर संकेत कर इन कवियों की आलोचना की है। उन्हें अजीब लगता है कि भारतेन्दु तथा उनके सहयोगी कवियों ने महारानी विक्टोरिया, ब्रिटिश शासनाध्यक्षों लॉर्ड लारेंस, लॉर्ड मेयो, लॉर्ड रिपन के संबध में लेख और कविताएं लिखकर उनकी प्रशंसा की है, अपनी श्रद्धांजलि प्रकट की है। भारतेन्दु महारानी विक्टोरिया के पुत्रों ड्यूक ऑफ एडिनबरा तथा प्रिंस ऑफ वेल्स के प्रति आभार एवं शुभकामनाएं प्रकट करते हैं। उनकी रचनाओं में चाटुकारिता की गंध आती है,

जाके दरस-हित सदा नैन परत पियास
सो मुख-चंद विलोकिहैं पूरी सब मन आस।

अथवा

स्वागत स्वागत धन्य तुम भावी राजाधिराज
भई अनाथा भूमि यह परसि चरन तुम आज

इन कवियों ने रानी विक्टोरिया को 'अर्थ की विक्टोरिया' तक कहा डाला है जो रीतिकालीन कवियों की राज-स्तुति से कम नहीं है।

इन कवियों की राजभक्तिपरक तथा ब्रिटिश शासन के प्रति आभार प्रकट करने वाली उक्तियों को ठीक से समझने के लिए महारानी विक्टोरिया के भारत की साम्राज्ञी बनने से पूर्व और उसके बाद की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। 1857 से पूर्व ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन था। वह एक व्यापारिक संस्था थी और

www.neerajbooks.com